लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद,हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

कार्तिक शुक्ल पक्ष, रात्रि 7.30 उपरांत एकादशी विक्रम संवत 2079

अमृत विचार

वर्ष 3, अंक 353, पृष्ठ 16, मूल्य: 6 रुपये

एक सम्पूर्ण अखबार

बरेली, गुरुवार, 3 नवंबर 2022

www.amritvichar.com

Page No : 03 TOP

- एसआरएमएस के रिद्धिमा में इंद्रधनुष रंग महोत्सव शाम 4:00 बजे से

Page No : 05 TOP

बनी ठनी से रसिक बिहारी का हुआ मंचन

अमृत विचार, बरेली

श्री राममूर्ति स्मारक रिद्धिमा में चल रहे थिएटर फेस्टिवल इंद्रधनुष रंग-महोत्सव के दूसरे दिन बुधवार को नाटक बनी ठनी से रसिक बिहारी का मंचन किया गया।

बनी ठनी नाम से किशन गढ़ी शैली के प्रसिद्ध चित्रकार निहाल चंद की पेंटिंग का स्मरण होता है। उन्हीं के जीवन पर आधारित नाटक बनी ठनी से रसिक बिहारी का मंचन नई दिल्ली के फाइव एलिमेंट्ज थिएटर की ओर से किया गया। राखी मानव के निर्देशन में इस नाटक का आरंभ श्री बांकेबिहारी की शयन आरती में रसिक बिहारी के पद गायन से होता है। सूत्रधार बताता है कि रसिक बिहारी ही असल में बनी ठनी थी। छोटी सी बन्नो को ढाई सौ अशर्फियों में किशन गढ़ के राजा राज सिंह खरीद कर अपनी पत्नी बंकावत की सेवा में सौंप देते हैं।

इंद्रधनुष रंग महोत्सव में नाटक का मंचन करते कलाकार। ● अमृत विचार

बन्नो को रानी कला व साहित्य की शिक्षा देती हैं: विलक्षण प्रतिभा की धनी बन्नो को रानी बंकावत कला, साहित्य की शिक्षा देतीं हैं। बड़े होने पर उनका परिचय राजा राज सिंह के बेटे कुंवर सावंत सिंह से होता जो उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर उनसे प्रेम करने लगते हैं। दोनों ही श्रीकृष्ण भक्ति में लीन रहते हैं। पिता और पत्नी लाल कुमारी का विरोध भी उनको बनी ठनी के साथ रहने से नहीं रोक पाता। राजपाठ से विरक्त सावंत सिंह, बनी ठनी के साथ वृंदावन चले जाते हैं। वहां राजा सावंत सिंह नागरीदास और बनी ठनी रसिक बिहारी नाम से कृष्ण लीलाओं की भक्तिमय काव्यों की रचना करते हैं। मंदिरों में सीमित सांझी लीला को लोक में प्रचलित करने के लिए मेलों का आयोजन करते हैं। नाटक की प्रस्तुति में कुछ दृश्य शैडो के माध्यम से प्रस्तुत किए गए।

- रिद्धिमा की ओर से इंद्रधनुष थिएटर महोत्सव के तहत हुआ मंचन
- आज नई दिल्ली के कलाकार करेंगे एक आवाज का मंचन

नाटक में सूत्रधारों, पात्रों और छाया का अद्भुत सामंजस्य देखने को मिला। नाटक में नाट्यशास्त्र के पारंपरिक तत्वों को सुंदरता से सम्मिलित किया गया है। अभिनय शैली यथार्थवादी है। नर्मदा प्रसाद की पुस्तक बनी ठनी से चित्रकला तक का नाट्य रूपांतरण तथा निर्देशन राखी मानव ने किया। मंच पर मानव मेहरा, इंदुला दास, मानसी मेहता, निधि सक्सेना, साकेत, विशाल वर्मा, शिव, रोबिन खन्ना, अभिनव, चेतन पांडेय ने अपनी-अपनी भूमिकाओं को कुशलता से निभाया। इसमें संगीत राहुल मेहरा ने दिया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में साईं सेवा ट्रस्ट की अध्यक्ष नीता कुदेशिया, एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, सुभाष मेहरा, डा. एसबी गुप्ता, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार, डा. रीटा शर्मा, रवि गट्टमल अग्रवाल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।